

Original Article

A COMPARATIVE STUDY OF THE EMOTIONAL INTELLIGENCE OF HIGH SCHOOL STUDENTS IN RELATION TO LOW AND HIGH MOBILE PHONE USAGE

मोबाइल फोन के कम एवं अधिक प्रभाव के संदर्भ में हाई स्कूल विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का तुलनात्मक अध्ययन

Devayani Shukla ^{1*}, Dr. Sunita Yadav ²

¹ Research Scholar, Department of Education, Shri Rawatpura Sarkar University, Raipur, Chhattisgarh, India

² Assistant Professor, Department of Education, Shri Rawatpura Sarkar University, Raipur, Chhattisgarh, India



ABSTRACT

English: In contemporary times, mobile phones have become an integral part of students' academic, social, and personal lives. Through them, students easily access knowledge, information, educational materials, communication channels, and various forms of entertainment. Conversely, excessive and uncontrolled mobile phone usage is linked to issues such as lack of attention, social isolation, sleep disturbances, anxiety, and behavioral dependency among students. Adolescence is a highly sensitive period regarding emotional development; therefore, studying the relationship between the impact of mobile phones and students' emotional intelligence is of significant importance. This research paper aims to conduct a comparative study of the emotional intelligence of high school students experiencing low versus high levels of mobile phone impact. The study focuses on 9th-grade students from selected urban and rural government high schools in the Raipur district. A total of 800 students—comprising 400 boys and 400 girls—participated in the comprehensive study; based on location, 400 students were from urban areas and 400 from rural areas. The impact of mobile phones was measured using the 'Smartphone Addiction Scale' developed by Dr. Vijayshree and Dr. Masood Ansari, while emotional intelligence was assessed using the 'Emotional Intelligence Scale' developed by Dr. Arun Kumar Singh and Dr. Shruti Narayan. Students were categorized into low and high mobile phone impact groups based on the overall mean smartphone addiction score of 70.16. Statistical analysis involved the use of mean, standard deviation, and independent sample t-tests. The results revealed that across all groups—urban boys, rural boys, urban girls, and rural girls—students with low mobile phone impact exhibited higher emotional intelligence compared to those with high mobile phone impact, and the differences observed in all groups were statistically significant. The research findings highlight the need to encourage balanced digital behavior, emotional development, and responsible mobile usage at the school level.

Hindi: वर्तमान समय में मोबाइल फोन विद्यार्थियों के शैक्षणिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है। इसके माध्यम से विद्यार्थी ज्ञान, सूचना, शैक्षिक सामग्री, संचार तथा मनोरंजन की विभिन्न सुविधाओं तक सहज रूप से पहुँच प्राप्त कर रहे हैं। दूसरी ओर, मोबाइल फोन का अत्यधिक एवं अनियंत्रित उपयोग विद्यार्थियों में ध्यान की कमी, सामाजिक अलगाव, नींद में व्यवधान, चिंता तथा व्यवहारगत निर्भरता जैसी स्थितियों से भी जुड़ा हुआ दिखाई देता है। किशोरावस्था भावनात्मक विकास की दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील अवस्था है, इसलिए मोबाइल फोन के प्रभाव और विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के मध्य विद्यमान अंतर का अध्ययन विशेष महत्व रखता है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य मोबाइल फोन के कम एवं अधिक प्रभाव वाले हाई स्कूल विद्यार्थियों की भावनात्मक

*Corresponding Author:

Email address: Devayani Shukla (Devayani.Shukla@outlook.com)

Received: 06 July 2026; Accepted: 23 August 2026; Published 28 September 2026

DOI: [10.29121/JISSI.v2.i2.2026.98](https://doi.org/10.29121/JISSI.v2.i2.2026.98)

Page Number: 81-87

Journal Title: Journal of Integrative Science and Societal Impact

Journal Abbreviation: J. Integr. Sci. Soc. Impact

Online ISSN: 3108-2165, Print ISSN: 3108-1959

Publisher: Granthaalayah Publications and Printers, India

Conflict of Interests: The authors declare that they have no competing interests.

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Authors' Contributions: Each author made an equal contribution to the conception and design of the study. All authors have reviewed and approved the final version of the manuscript for publication.

Transparency: The authors affirm that this manuscript presents an honest, accurate, and transparent account of the study. All essential aspects have been included, and any deviations from the original study plan have been clearly explained. The writing process strictly adhered to established ethical standards.

Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a [Creative Commons Attribution 4.0](https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/) International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

बुद्धिमत्ता का तुलनात्मक अध्ययन करना है। शोध रायपुर जिले के चयनित शहरी एवं ग्रामीण शासकीय उच्च विद्यालयों में कक्षा 9वीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों पर आधारित है। व्यापक शोध में कुल 800 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया, जिनमें 400 छात्र तथा 400 छात्राएँ थीं। क्षेत्र के आधार पर 400 विद्यार्थी शहरी तथा 400 विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्र से संबंधित थे। मोबाइल फोन के प्रभाव का मापन डॉ. विजयश्री एवं डॉ. मसऊद अंसारी द्वारा निर्मित स्मार्ट फोन आसक्ति मापनी तथा भावनात्मक बुद्धिमत्ता का मापन डॉ. अरुण कुमार सिंह एवं डॉ. श्रुति नारायण द्वारा निर्मित भावनात्मक बुद्धिमत्ता मापनी के माध्यम से किया गया। स्मार्ट फोन आसक्ति के समग्र माध्य 70.16 के आधार पर विद्यार्थियों को कम एवं अधिक मोबाइल फोन प्रभाव वाले समूहों में वर्गीकृत किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन तथा स्वतंत्र नमूना टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि शहरी छात्रों, ग्रामीण छात्रों, शहरी छात्राओं तथा ग्रामीण छात्राओं—सभी समूहों में कम मोबाइल फोन प्रभाव वाले विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता अधिक मोबाइल फोन प्रभाव वाले विद्यार्थियों की तुलना में उच्च पाई गई तथा सभी समूहों में प्राप्त अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक रहा। शोध के निष्कर्ष विद्यालयी स्तर पर संतुलित डिजिटल व्यवहार, भावनात्मक विकास तथा उत्तरदायी मोबाइल उपयोग को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं।

Keywords: Mobile Phone, Smartphone Addiction, Emotional Intelligence, High School Students, Adolescence, Urban Students, Rural Students, मोबाइल फोन, स्मार्ट फोन आसक्ति, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, हाई स्कूल विद्यार्थी, किशोरावस्था, शहरी विद्यार्थी, ग्रामीण विद्यार्थी

प्रस्तावना

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने मानव जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। शिक्षा के क्षेत्र में भी डिजिटल तकनीक के विस्तार ने ज्ञान प्राप्त करने, शिक्षण सामग्री तक पहुँचने और पारस्परिक संवाद स्थापित करने के तरीकों में उल्लेखनीय परिवर्तन किया है। मोबाइल फोन इस तकनीकी परिवर्तन का सबसे अधिक सुलभ और व्यापक साधन बनकर सामने आया है। विद्यालयी विद्यार्थी मोबाइल फोन के माध्यम से शैक्षिक वीडियो, डिजिटल पुस्तकें, ऑनलाइन कक्षाएँ, अध्ययन सामग्री तथा विभिन्न शैक्षिक अनुप्रयोगों का उपयोग कर सकते हैं। इस दृष्टि से मोबाइल फोन आधुनिक शिक्षा में उपयोगी सहायक साधन के रूप में कार्य कर सकता है।

मोबाइल फोन की उपयोगिता के साथ-साथ उसके अत्यधिक प्रयोग से उत्पन्न होने वाली चुनौतियाँ भी महत्वपूर्ण हैं। जब मोबाइल फोन का उपयोग विद्यार्थी की आवश्यकता और उद्देश्य से आगे बढ़कर निरंतर एवं बाध्यकारी व्यवहार का रूप लेने लगता है, तब उसके दैनिक जीवन, अध्ययन, सामाजिक संपर्क और भावनात्मक संतुलन पर इसका प्रभाव दिखाई दे सकता है। बार-बार मोबाइल फोन देखने की प्रवृत्ति, अध्ययन के समय ध्यान भटकना, वास्तविक सामाजिक संपर्क में कमी, नींद में व्यवधान तथा मोबाइल उपलब्ध न होने पर बेचैनी जैसी स्थितियाँ स्मार्ट फोन आसक्ति से संबंधित व्यवहार के रूप में देखी जाती हैं।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता विद्यार्थी के समग्र व्यक्तित्व विकास का महत्वपूर्ण पक्ष है। यह व्यक्ति को अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को पहचानने, समझने और उचित रूप से संचालित करने में सक्षम बनाती है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता में भावनाओं की समझ, प्रेरणा की समझ, सहानुभूति तथा संबंध प्रबंधन जैसी क्षमताएँ सम्मिलित होती हैं। विद्यालयी जीवन में ये क्षमताएँ विद्यार्थियों को सामाजिक परिस्थितियों में समायोजन करने, कठिनाइयों का सामना करने, आत्म-नियंत्रण बनाए रखने तथा स्वस्थ पारस्परिक संबंध विकसित करने में सहायता प्रदान करती हैं।

किशोरावस्था में मोबाइल फोन का बढ़ता उपयोग और भावनात्मक विकास दोनों ही अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इसलिए यह समझना आवश्यक है कि मोबाइल फोन के कम एवं अधिक प्रभाव वाले विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता में किस प्रकार का अंतर विद्यमान है। प्रस्तुत शोध-पत्र इसी विषय को शहरी छात्रों, ग्रामीण छात्रों, शहरी छात्राओं तथा ग्रामीण छात्राओं के संदर्भ में समझने का प्रयास करता है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा मोबाइल फोन एवं किशोर विद्यार्थी

मोबाइल फोन ने विद्यार्थियों के लिए ज्ञान और सूचना प्राप्त करने की प्रक्रिया को अधिक सरल बनाया है। इसके माध्यम से विद्यार्थी आवश्यकता के अनुसार शैक्षिक सामग्री प्राप्त कर सकते हैं तथा विभिन्न विषयों से संबंधित जानकारी तत्काल खोज सकते हैं। इसके बावजूद मोबाइल फोन का अनियंत्रित उपयोग विद्यार्थियों के अध्ययन-समय, एकाग्रता और दैनिक दिनचर्या को प्रभावित कर सकता है। मोबाइल का अत्यधिक उपयोग धीरे-धीरे निर्भरता का रूप ग्रहण कर सकता है और विद्यार्थी बार-बार मोबाइल फोन देखने की आदत विकसित कर सकते हैं।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता

भावनात्मक बुद्धिमत्ता व्यक्ति की उस क्षमता को व्यक्त करती है जिसके माध्यम से वह अपनी भावनाओं को पहचानता, समझता एवं नियंत्रित करता है तथा दूसरों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील व्यवहार करता है। विद्यार्थियों के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि विद्यालयी जीवन में उन्हें प्रतिस्पर्धा, परीक्षा, मित्रता, पारिवारिक अपेक्षाओं तथा सामाजिक परिस्थितियों से संबंधित विभिन्न भावनात्मक अनुभवों का सामना करना पड़ता है। उच्च भावनात्मक दक्षता विद्यार्थियों को इन परिस्थितियों में संतुलित प्रतिक्रिया विकसित करने में सहायता प्रदान कर सकती है।

मोबाइल फोन प्रभाव एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता

पूर्व शोधों से यह संकेत प्राप्त होता है कि अत्यधिक मोबाइल निर्भरता तथा भावनात्मक कार्यप्रणाली के विभिन्न पक्षों के मध्य संबंध पाया जा सकता है। विशेष रूप से आत्म-नियमन, भावनात्मक नियंत्रण, सामाजिक सहभागिता तथा संबंध प्रबंधन जैसे पक्ष तकनीकी उपयोग की प्रकृति से जुड़े हो सकते हैं। अतः मोबाइल फोन उपयोग को केवल समय या आवृत्ति के आधार पर समझना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसकी निर्भरता एवं व्यवहारगत तीव्रता को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

शोध-अंतराल

पूर्ववर्ती शोधों में मोबाइल फोन उपयोग, स्मार्ट फोन आसक्ति तथा भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विभिन्न संदर्भों में अध्ययन किया गया है। तथापि हाई स्कूल स्तर पर ऐसे शोध अपेक्षाकृत सीमित हैं जिनमें कम एवं अधिक मोबाइल फोन प्रभाव वाले विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता की तुलना शहरी छात्रों, ग्रामीण छात्रों, शहरी छात्राओं तथा ग्रामीण छात्राओं के संदर्भ में पृथक-पृथक की गई हो। विशेष रूप से रायपुर जिले के शासकीय विद्यालयों में कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों के संदर्भ में इस प्रकार के तुलनात्मक शोध की आवश्यकता अनुभव की गई। इसी शोध-अंतराल को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध-पत्र तैयार किया गया है।

शोध के उद्देश्य

- 1) कम एवं अधिक मोबाइल फोन प्रभाव वाले शहरी छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता की तुलना करना।
- 2) कम एवं अधिक मोबाइल फोन प्रभाव वाले ग्रामीण छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता की तुलना करना।
- 3) कम एवं अधिक मोबाइल फोन प्रभाव वाली शहरी छात्राओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता की तुलना करना।
- 4) कम एवं अधिक मोबाइल फोन प्रभाव वाली ग्रामीण छात्राओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता की तुलना करना।

शोध की शून्य परिकल्पनाएँ

शून्य परिकल्पना-1: कम एवं अधिक मोबाइल फोन प्रभाव वाले शहरी छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के माध्य प्राप्तांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

शून्य परिकल्पना-2: कम एवं अधिक मोबाइल फोन प्रभाव वाले ग्रामीण छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के माध्य प्राप्तांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

शून्य परिकल्पना-3: कम एवं अधिक मोबाइल फोन प्रभाव वाली शहरी छात्राओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के माध्य प्राप्तांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

शून्य परिकल्पना-4: कम एवं अधिक मोबाइल फोन प्रभाव वाली ग्रामीण छात्राओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के माध्य प्राप्तांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

शोध-पद्धति

शोध अभिकल्प

प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक, तुलनात्मक, मात्रात्मक, सर्वेक्षण-आधारित एवं अप्रयोगात्मक प्रकृति का है। शोध में किसी भी चर का प्रयोगात्मक परिवर्तन नहीं किया गया। विद्यार्थियों में विद्यमान स्मार्ट फोन आसक्ति और भावनात्मक बुद्धिमत्ता का मापन मानकीकृत मापनियों के माध्यम से किया गया तथा कम एवं अधिक मोबाइल फोन प्रभाव वाले स्वतंत्र समूहों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता की तुलना की गई।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध की जनसंख्या में रायपुर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित शासकीय उच्च विद्यालयों में कक्षा 9वीं में अध्ययनरत विद्यार्थी सम्मिलित थे। लक्षित जनसंख्या में कुल 25,678 विद्यार्थी थे, जिनमें शहरी क्षेत्र के 6,742 तथा ग्रामीण क्षेत्र के 18,936 विद्यार्थी सम्मिलित थे।

प्रतिदर्श

शोध में कुल 800 विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में सम्मिलित किया गया। इनमें 400 छात्र और 400 छात्राएँ थीं। इसी प्रकार 400 विद्यार्थी शहरी तथा 400 विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्र से थे।

क्षेत्र	छात्र	छात्राएँ	कुल
शहरी	200	200	400
ग्रामीण	200	200	400
कुल	400	400	800

शोध के चर

स्वतंत्र चर : मोबाइल फोन का प्रभाव

आश्रित चर : भावनात्मक बुद्धिमत्ता

वर्गीकरण चर : क्षेत्र एवं लिंग

यहाँ मोबाइल फोन के “प्रभाव” से आशय प्रत्यक्ष प्रयोगात्मक कारणात्मक प्रभाव से नहीं है। इसका आशय स्मार्ट फोन आसक्ति के कम एवं अधिक स्तर वाले समूहों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के माध्य प्राप्तांकों में पाए जाने वाले सांख्यिकीय अंतर से है।

शोध उपकरण

स्मार्ट फोन आसक्ति मापनी : डॉ. विजयश्री एवं डॉ. मसऊद अंसारी द्वारा निर्मित इस मापनी में कुल 23 कथन हैं। इसमें बाध्यकारी प्रवृत्ति, भूलने की प्रवृत्ति, ध्यान की कमी, अवसाद एवं चिंता, भूख एवं नींद में व्यवधान तथा सामाजिक अलगाव के छह आयाम सम्मिलित हैं।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता मापनी : डॉ. अरुण कुमार सिंह एवं डॉ. श्रुति नारायण द्वारा निर्मित इस मापनी में कुल 31 कथन हैं। इसके चार आयाम हैं—भावनाओं की समझ, प्रेरणा की समझ, सहानुभूति तथा संबंध प्रबंधन।

आँकड़ा-संग्रहण की प्रक्रिया

चयनित विद्यालयों से प्रशासनिक अनुमति प्राप्त करने के पश्चात विद्यार्थियों को शोध के उद्देश्य एवं गोपनीयता संबंधी निर्देश दिए गए। सर्वप्रथम स्मार्ट फोन आसक्ति मापनी तथा उसके पश्चात भावनात्मक बुद्धिमत्ता मापनी का सामूहिक प्रशासन किया गया। उत्तर-पत्रकों की जाँच के बाद पूर्ण एवं स्पष्ट प्रतिक्रियाओं को अंतिम विश्लेषण में सम्मिलित किया गया। संबंधित उत्तर-कुंजियों के आधार पर अंकन कर प्रत्येक विद्यार्थी के दोनों मापनियों के कुल प्राप्तांक निर्धारित किए गए तथा उन्हें क्षेत्र एवं लिंग के अनुसार वर्गीकृत किया गया।

सांख्यिकीय तकनीकें

आँकड़ों के विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन तथा स्वतंत्र नमूना टी-परीक्षण का प्रयोग किया गया। समस्त 800 विद्यार्थियों के स्मार्ट फोन आसक्ति प्राप्तांकों का समग्र माध्य 70.16 प्राप्त हुआ। अतः 70 अथवा उससे कम अंक वाले विद्यार्थियों को कम मोबाइल फोन प्रभाव समूह तथा 71 अथवा उससे अधिक अंक वाले विद्यार्थियों को अधिक मोबाइल फोन प्रभाव समूह में रखा गया। सभी शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण 0.05 सार्थकता स्तर पर किया गया।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका 1

तालिका 1 शहरी छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता की तुलना						
मोबाइल फोन प्रभाव	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी-मूल्य	स्वतंत्रता की मात्रा	सार्थकता
कम प्रभाव	99	22.43	4.65	11.36	198	0.001 से कम
अधिक प्रभाव	101	13.93	5.85			

व्याख्या : कम मोबाइल फोन प्रभाव वाले शहरी छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का माध्य 22.43 तथा अधिक प्रभाव वाले छात्रों का माध्य 13.93 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों में 8.50 अंकों का माध्यांतर पाया गया। प्राप्त टी-मूल्य 11.36 होने के कारण अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक पाया गया। अतः प्रथम शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की गई।

तालिका 2

तालिका 2 ग्रामीण छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता की तुलना						
मोबाइल फोन प्रभाव	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी-मूल्य	स्वतंत्रता की मात्रा	सार्थकता
कम प्रभाव	104	21.98	5.45	9.38	198	0.001 से कम
अधिक प्रभाव	96	14.73	5.47			

व्याख्या : कम मोबाइल फोन प्रभाव वाले ग्रामीण छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का माध्य 21.98 तथा अधिक मोबाइल फोन प्रभाव वाले छात्रों का माध्य 14.73 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों में 7.25 अंकों का अंतर पाया गया। प्राप्त टी-मूल्य 9.38 होने के कारण यह अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक पाया गया। अतः द्वितीय शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की गई।

तालिका 3

तालिका 3 शहरी छात्राओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता की तुलना						
मोबाइल फोन प्रभाव	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी-मूल्य	स्वतंत्रता की मात्रा	सार्थकता
कम प्रभाव	99	21.90	5.26	9.01	198	0.001 से कम
अधिक प्रभाव	101	14.49	6.31			

व्याख्या : कम मोबाइल फोन प्रभाव वाली शहरी छात्राओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का माध्य 21.90 तथा अधिक प्रभाव वाली छात्राओं का माध्य 14.49 पाया गया। दोनों समूहों के मध्य 7.41 अंकों का अंतर पाया गया। प्राप्त टी-मूल्य 9.01 होने के कारण अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक रहा। अतः तृतीय शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की गई।

तालिका 4

तालिका 4 ग्रामीण छात्राओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता की तुलना						
मोबाइल फोन प्रभाव	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी-मूल्य	स्वतंत्रता की मात्रा	सार्थकता
कम प्रभाव	115	22.14	5.00	9.08	198	0.001 से कम
अधिक प्रभाव	85	15.09	5.95			

व्याख्या : कम मोबाइल फोन प्रभाव वाली ग्रामीण छात्राओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का माध्य 22.14 तथा अधिक प्रभाव वाली छात्राओं का माध्य 15.09 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों में 7.05 अंकों का माध्यांतर पाया गया। प्राप्त टी-मूल्य 9.08 होने के कारण यह अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक पाया गया। अतः चतुर्थ शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की गई।

शोध के प्रमुख परिणाम

- 1) कम मोबाइल फोन प्रभाव वाले शहरी छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता अधिक मोबाइल फोन प्रभाव वाले शहरी छात्रों की तुलना में उच्च पाई गई।
- 2) ग्रामीण छात्रों में भी कम मोबाइल फोन प्रभाव वाले समूह का भावनात्मक बुद्धिमत्ता माध्य अधिक प्रभाव वाले समूह से उच्च पाया गया।
- 3) शहरी छात्राओं में मोबाइल फोन के कम एवं अधिक प्रभाव वाले समूहों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता में सार्थक अंतर पाया गया।
- 4) ग्रामीण छात्राओं में भी कम मोबाइल फोन प्रभाव वाले समूह की भावनात्मक बुद्धिमत्ता तुलनात्मक रूप से अधिक रही।
- 5) चारों समूहों में प्राप्त अंतर सांख्यिकीय रूप से सार्थक रहे।
- 6) शहरी छात्रों में माध्यांतर 8.50, ग्रामीण छात्रों में 7.25, शहरी छात्राओं में 7.41 तथा ग्रामीण छात्राओं में 7.05 प्राप्त हुआ।
- 7) सभी समूहों में अधिक मोबाइल फोन प्रभाव वाले विद्यार्थियों के भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्राप्तांक तुलनात्मक रूप से कम पाए गए।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध-पत्र से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि मोबाइल फोन के कम एवं अधिक प्रभाव के स्तर के अनुसार हाई स्कूल विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता में सार्थक अंतर विद्यमान है। यह प्रवृत्ति शहरी छात्रों, ग्रामीण छात्रों, शहरी छात्राओं तथा ग्रामीण छात्राओं—सभी समूहों में समान दिशा में पाई गई। प्रत्येक समूह में कम मोबाइल फोन प्रभाव वाले विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का माध्य अधिक प्रभाव वाले विद्यार्थियों की तुलना में उच्च रहा।

यहाँ प्राप्त परिणामों को प्रत्यक्ष कारणात्मक प्रमाण के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, क्योंकि शोध अप्रयोगात्मक एवं तुलनात्मक प्रकृति का है। परिणाम केवल यह स्पष्ट करते हैं कि स्मार्ट फोन आसक्ति के कम एवं अधिक स्तर वाले विद्यार्थियों के भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्राप्तांकों में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर पाया गया। अतः विद्यालयों एवं परिवारों में संतुलित, उद्देश्यपूर्ण तथा उत्तरदायी मोबाइल उपयोग के प्रति विद्यार्थियों को जागरूक करना उपयोगी हो सकता है।

शोध के शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष विद्यालयों को यह संकेत देते हैं कि डिजिटल शिक्षा के साथ डिजिटल अनुशासन पर भी समान रूप से ध्यान दिया जाना आवश्यक है। विद्यालयों में मोबाइल फोन के पूर्ण निषेध की अपेक्षा उसके नियंत्रित, शैक्षणिक एवं उद्देश्यपूर्ण उपयोग की समझ विकसित की जानी चाहिए। भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विकास हेतु विद्यालयों में समूह कार्य, भूमिका-अभिनय, जीवन-कौशल गतिविधियाँ, सहानुभूति आधारित अभ्यास तथा संवादात्मक कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं।

शिक्षकों को विद्यार्थियों में अत्यधिक मोबाइल निर्भरता से संबंधित व्यवहारगत संकेतों के प्रति सजग रहना चाहिए। साथ ही अभिभावकों को भी केवल मोबाइल उपयोग पर प्रतिबंध लगाने के बजाय बच्चों के साथ संवाद, समय-प्रबंधन और स्वस्थ डिजिटल दिनचर्या विकसित करने पर ध्यान देना चाहिए।

सुझाव

- 1) विद्यालयों में उत्तरदायी एवं संतुलित मोबाइल उपयोग से संबंधित जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
- 2) विद्यार्थियों के लिए डिजिटल अनुशासन एवं समय-प्रबंधन संबंधी गतिविधियाँ संचालित की जाएँ।
- 3) भावनात्मक बुद्धिमत्ता से संबंधित जीवन-कौशल कार्यक्रम विद्यालयी गतिविधियों में सम्मिलित किए जाएँ।
- 4) विद्यार्थियों को वास्तविक सामाजिक संपर्क एवं समूह गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।
- 5) अभिभावकों को संतुलित डिजिटल पालन-पोषण के संबंध में मार्गदर्शन प्रदान किया जाए।
- 6) विद्यालयी परामर्श सेवाओं में मोबाइल निर्भरता से संबंधित समस्याओं को सम्मिलित किया जाए।
- 7) शहरी एवं ग्रामीण दोनों प्रकार के विद्यालयों में डिजिटल जागरूकता कार्यक्रम संचालित किए जाएँ।
- 8) भावी शोध में मोबाइल उपयोग की अवधि, उद्देश्य, सामाजिक माध्यमों के उपयोग तथा ऑनलाइन खेलों के प्रभाव का पृथक अध्ययन किया जा सकता है।
- 9) भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विभिन्न आयामों का अलग-अलग अध्ययन किया जा सकता है।
- 10) भविष्य में प्रयोगात्मक शोध के माध्यम से डिजिटल अनुशासन एवं भावनात्मक विकास कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का परीक्षण किया जा सकता है।

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

- Arrivillaga, C., Rey, L., and Extremera, N. (2022). Psychological Stress, Repetitive Thinking, and Problematic Smartphone Use Among Spanish Adolescents: An Emotional Intelligence-Based Analysis. *Journal of Affective Disorders*, (स्पेनिश किशोरों में मनोवैज्ञानिक तनाव, विचारों की पुनरावृत्ति और समस्यात्मक स्मार्ट फोन उपयोग: भावनात्मक बुद्धिमत्ता आधारित विश्लेषण. *जर्नल ऑफ अफेक्टिव डिसऑर्डर्स*) 296, 1–8. <https://doi.org/10.1016/j.jad.2021.09.021>
- Beranuy, M., Oberst, U., Carbonell, X., and Chamarro, A. (2009). Problematic Internet and Mobile Phone Use and Clinical Symptoms in College Students: The Role of Emotional Intelligence. *Computers in Human Behavior*, (महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में समस्यात्मक इंटरनेट एवं मोबाइल फोन उपयोग और नैदानिक लक्षण: भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका. *कम्प्यूटर्स इन ह्यूमन बिहेवियर*) 25(5), 1182–1187. <https://doi.org/10.1016/j.chb.2009.03.001>
- Goleman, D. (1995). *Emotional Intelligence: Why it Can Matter More Than IQ*. Bantam Books. (इमोशनल इंटेलिजेंस: व्हाई इट कैन मैटर मोर दैन आईक्यू. बैटम बुक्स)
- Kun, B., and Demetrovics, Z. (2010). Emotional Intelligence and Addictions: A Systematic Review. *Substance Use and Misuse*, (भावनात्मक बुद्धिमत्ता और आसक्तियाँ: एक व्यवस्थित समीक्षा. *सब्सटेंस यूज़ एंड मिसयूज़*) 45(7–8), 1131–1160. <https://doi.org/10.3109/10826080903567855>
- Karthikeyan, S., Ramu, P., and Balaji, M. S. (2025). Comparative Study of Predictive Models and Real-World Data in 3D Printing Time Estimation. *International Journal of Engineering Science Technologies*, (3D प्रिंटिंग में समय का अनुमान लगाने के लिए प्रेडिक्टिव मॉडल और असल दुनिया के डेटा का तुलनात्मक अध्ययन। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग साइंस टेक्नोलॉजीज़*) 9(2), 44–61. <https://doi.org/10.29121/ijest.v9.i2.2025>
- Mascia, M. L., Agus, M., and Penna, M. P. (2020). Emotional Intelligence, Self-Regulation, and Smartphone Addiction: Associations with Student Well-Being and Quality of Life. *Frontiers in Psychology*, (भावनात्मक बुद्धिमत्ता, आत्म-नियमन और स्मार्ट फोन आसक्ति: विद्यार्थी कल्याण एवं जीवन-गुणवत्ता के साथ संबंध. *फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी*) 11, 375. <https://doi.org/10.3389/fpsyg.2020.00375>
- Mayer, J. D., Salovey, P., and Caruso, D. R. (2000). Emotional Intelligence and Traditional Standards of Intelligence. *Intelligence*, (भावनात्मक बुद्धिमत्ता और बुद्धिमत्ता के पारंपरिक मानदंड. *इंटेलिजेंस*) 27, 267–298. [https://doi.org/10.1016/S0160-2896\(99\)00016-1](https://doi.org/10.1016/S0160-2896(99)00016-1)

- Nidhi, Shivakumar, P., Hegde, B., and Davis, A. (2024). Relationship Between Emotional Intelligence, Smartphone Addiction, and Fear of Missing Out Among Students. *INSPA Journal of Applied and School Psychology, Special Issue*, (विद्यार्थियों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता, स्मार्ट फोन आसक्ति और छूट जाने की आशंका के मध्य संबंध. आई.एन.एस.पी.ए. जर्नल ऑफ एप्लाइड एंड स्कूल साइकोलॉजी, विशेषांक) 108–113.
- Singh, R. (2020). Smartphone Addiction and Emotional Intelligence Among Adolescents. *IAR Journal of Humanities and Social Sciences*, (किशोरों में स्मार्ट फोन आसक्ति और भावनात्मक बुद्धिमत्ता. आई.ए.आर. जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस) 1(2), 1–4. <https://doi.org/10.47310/iarjhss.2020.v01i02.009>
- Vizguerra Morales, P., and Mederos Nieto, F. S. (2024). Comparative Study Using CFD of Counter-Current and Co-Current Hydrotreating Reactors Using *Jatropha Curcas* L Vegetable oil. *International Journal of Engineering Science Technologies*, (जेट्रोफा करकस एल. वनस्पति तेल का उपयोग करते हुए काउंटर-करंट और को-करंट हाइड्रोटीटिंग रिएक्टरों का CFD के ज़रिए तुलनात्मक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग साइंस टेक्नोलॉजीज़) 8(5), 1–19. <https://doi.org/10.29121/ijoest.v8.i5.2024.635>